दैनिक जागरण

सोमवार, 15 अगस्त, 2016 : श्रावण शुक्ल 12, वि . 2073

आजादी के अहसास में कर्तव्यों का निर्वहन भी समाहित है

राष्ट्र निर्माण का संदेश

राष्ट्रपति ने स्वतंत्रता दिवस की पूर्वसंध्या पर राष्ट्र के नाम संदेश में यह जो कहा कि दलितों और अल्पसंख्यकों पर हमलों से सख्ती से निपटा जाना चाहिए वह इसीलिए जरूरी था, क्योंकि दलित-अल्पसंख्यकों के मान-सम्मान की रक्षा का सवाल सतह पर है। यह स्पष्ट ही है कि राष्ट्रपति का यह संदेश शासन एवं प्रशासन के महत्वपूर्ण पदों पर बैठे लोगों के लिए है, लेकिन आवश्यकता इस बात की है कि इस संदेश को देश के सभी नागरिक आत्मसात करें। यह तभी हो सकेगा जब आम जनता एक नागरिक के तौर पर अपने दायित्वों को लेकर चिंतन-मनन करेगी। चिंतन-मनन के लिए स्वतंत्रता दिवस से बेहतर और कोई दिन नहीं हो सकता। चिंतन-मनन के इस क्रम में इस पर विशेष ध्यान देना होगा कि आखिर क्या कारण है कि आजादी के सात दशक बाद भी देश और समाज को उन सवालों से जूझना पड़ रहा है जो आजादी के बाद एक खतरे के तौर पर उभर आए थे? किसी भी राष्ट्र का निर्माण इससे होता है कि वहां के लोग राष्ट्रीय एकता और अखंडता के प्रति कितने सजग और सचेत हैं। राष्ट्रीय एकता-अखंडता की बातें तो बहुत होती हैं, खासतौर पर स्वतंत्रता दिवस के दिन तो और भी, लेकिन ऐसे प्रयास मुश्किल से ही होते हैं जिनसे हमारी एकजुटता और सशक्त हो। एकजुटता को मजबूत करने की पहली शर्त है कि देश का प्रत्येक नागरिक स्वयं को सबसे पहले एक भारतीय के रूप में देखे-समझे और उसी के अनुरूप आचरण भी करे।

राष्ट्रपति ने यह ठीक ही इंगित किया कि कुछ संगठन-समूह विभाजनकारी एजेंडे पर चल रहे हैं। चिंता की बात यह है कि हाल के समय में यह दिख रहा है कि इस एजेंडे को धार देने की कोशिश हो रही है। इस कोशिश के खिलाफ सभी को खड़ा होना होगा, क्योंकि इसका कोई औचित्य नहीं कि वे समूह-संगठन इस भ्रम से ग्रस्त दिखें कि वे अपने एजेंडे को हासिल कर सकते हैं। ऐसे संगठन इस भ्रम से इसीलिए ग्रस्त हैं, क्योंकि उन्हें किसी न किसी स्तर पर प्रोत्साहन मिल रहा है। यह ठीक नहीं कि आजादी के इतने वर्षों बाद किसी राष्ट्रपति को यह सब कहना पड़े। राष्ट्रपति के इस कथन से भी असहमत नहीं हुआ जा सकता कि अतीत की उपलब्धियों पर आत्ममुग्ध रहने का कोई अर्थ नहीं। देश तब बनेगा और संवरेगा जब उपलब्ध संभावनाओं को हासिल करने के लक्ष्य पर ध्यान केंद्रित किया जाएगा। अच्छा यह होगा कि यह स्वतंत्रता दिवस देश-दुनिया को यह संदेश देने में समर्थ हो सके कि भारत अपनी समस्याओं से मुक्त होने के लिए संकल्पबद्ध है और इस प्रक्रिया में कहीं अधिक एकजुट है। इस एकजुटता का प्रदर्शन नीति-नियंताओं के स्तर पर भी उतना ही आवश्यक है जितना कि आम जनता के स्तर पर। निःसंदेह इस क्रम में भिन्न-भिन्न विचार सामने आएंगे, लेकिन विचारों की भिन्नता राष्ट्र निर्माण में बाधक नहीं बननी चाहिए। वैसे तो इस बाधा को दूर करने की जिम्मेदारी सभी पर है, लेकिन इस मामले में नीति निर्माताओं को राह दिखाने वाला काम करना चाहिए-ठीक वैसे ही जैसे अभी पिछले दिनों संसद में जीएसटी विधेयक के संदर्भ में दिखाया गया। इस विधेयक के मामले में जिस तरह तमाम मतभेदों के बावजूद समाधान की राह तक पहुंचा गया ठीक उसी तरह देश की समस्याओं के समाधान के मामले में भी पहुंचा जा सकता है। इस मामले में यदि कहीं कोई कमी है तो इच्छाशक्ति की। उम्मीद की जानी चाहिए कि यह स्वतंत्रता दिवस हम सभी को राष्ट्र के उत्थान के लिए संकल्पबद्ध करे और सामर्थ्य प्रदान करे।

घोर लापरवाही

स्वतंत्रता दिवस फुलड्रेस रिहर्सल के लिए की गई यातायात व्यवस्था से एक मरीज की मौत हो जाना दुखद है। यह ड्यूटी पर तैनात पुलिसकर्मियों की संवेदनहीनता का भी उदाहरण है। इसलिए इस मामले की जांच कर दोषी पुलिसवालों के खिलाफ कार्रवाई की जानी चाहिए। यह पहला मामला नहीं है जब पुलिसकर्मियों की लापरवाही की वजह से किसी की जान सड़क पर चली गई हो। पिछले महीने ही एक बीमार पुलिस वाले की भी समय पर इलाज नहीं मिलने के कारण मौत हो गई थी। देश की राजधानी में समय पर अस्पताल नहीं पहुंचने के कारण इस तरह से मरीजों की मौत निश्चित रूप से चिंता का विषय है। इसलिए सरकार और दिल्ली पुलिस को इस बारे में गंभीरता से विचार करना होगा जिससे कि किसी भी बीमार व्यक्ति को अस्पताल पहुंचने में आने वाली बाधा को रोका जा सके। यह ठीक है कि वीआइपी मूवमेंट, राष्ट्रीय त्योहार और अन्य बड़े आयोजनों के समय सुरक्षा के लिए विशेष एहतियात बरतनी होती है और इसके लिए कई सड़कों पर वाहनों की आवाजाही रोक दी जाती है। सुरक्षा जरूरी है यही कारण है कि लोग रूट डायवर्जन से होने वाली परेशानी को लेकर बहुत ज्यादा शिकायत भी नहीं करते हैं लेकिन पुलिस प्रशासन को भी ध्यान रखना चाहिए उनके द्वारा उठाया गया कदम किसी के लिए जानलेवा न हो। यदि शनिवार को पुलिसकर्मी मरीज को अस्पताल पहुंचाने में सहयोग देते तो उसकी जान बच सकती थी। गांधीनगर निवासी कैलाशचंद मौर्या को दिल का दौरा पड़ा था जिन्हें इलाज के लिए ऑटो में लेकर उनका परिवार एलएनजेपी अस्पताल जा रहा था लेकिन रूट डायवर्जन की वजह से उन्हें समय पर अस्पताल नहीं पहुंचाया जा सका और उनकी जान चली गई। पीड़ित परिवार की शिकायत है कि पुलिसवालों को बीमारी की बात बताने के बावजूद उन्होंने मदद नहीं की।

इस घटना पर दिल्ली पुलिस ने अफसोस जताते हुए कहा है कि ऑटो की वजह से पुलिसकर्मियों को मेडिकल इमरजेंसी का पता नहीं चला। इस तरह की दलील देकर पुलिस अपनी जिम्मेदारी से बच नहीं सकती है। यह सही है कि मरीज को एंबुलेंस के बजाय उसके परिजन ऑटो में लेकर जा रहे थे क्या सिर्फ इस आधार पर किसी को अस्पताल पहुंचने से रोका जा सकता है। जब मौके पर तैनात पुलिस वाले को ऑटो में मरीज होने की जानकारी मिल गई थी तो फिर उसे आगे जाने से क्यों रोका गया? पुलिस के अफसोस जता देने भर से पीड़ित परिवार को इंसाफ नहीं मिल सकता है। इसकी जांच होनी चाहिए। इसके साथ ही भविष्य में इस तरह की घटना नहीं हो इसके लिए भी जरूरी कदम उठाने की जरूरत है।

स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर लोगों से देशभक्ति की सच्ची भावना को अपनाने की अपेक्षा कर रहे हैं **गुरचरण दास**

भारतीयता का मतलब

आज स्वतंत्रता दिवस है। भारतीय होने का अर्थ जानने का इससे अच्छा दिन और कोई नहीं हो सकता। हाल के वर्षों में भारत सहित पूरे विश्व में राष्ट्रवाद की भावना उभरी है, जो कई लोगों के लिए मुश्किल भी पैदा करती रही है। यह नए तरह का राष्ट्रवाद भारी नुकसान पहुंचा रहा है। लोगों को विदेशियों का विरोधी बना रहा है और अपनी सीमाओं को बंद कर देना चाहता है ताकि अप्रवासी अंदर न आ सकें। यह राष्ट्रवाद मुक्त व्यापार के खिलाफ है। इससे भी बड़ी समस्या यह है कि यह राष्ट्रवाद विश्व इतिहास के बीते सत्तर साल की उस शानदार विरासत को नष्ट करने पर आमादा है जिसने दुनिया को समृद्धि और शांति से नवाजा है। भारत में इस राष्ट्रवाद ने लोगों को भारतीय बनने पर कम, लेकिन हिंदू, मुस्लिम और दलित बनने पर ज्यादा जोर दिया है।

हम अपनी सामान्य बातचीत में अक्सर दो शब्दों राष्ट्रवाद और देशभक्ति को लेकर दिग्भ्रमित रहते हैं। हम प्रायः दोनों शब्दों का प्रयोग एक दूसरे के बदले करते रहते हैं, लेकिन भूल जाते हैं कि दोनों विपरीत अर्थ लिए होते हैं। यदि हम 21वीं सदी में एक भारतीय की दुविधा को समझना चाहते हैं तो हमें दोनों शब्दों में अंतर समझना जरूरी है। एक देशभक्त अपने देश, वहां की जीवन पद्धति, उसकी उपलब्धियों और उसके इतिहास से प्यार करता है, लेकिन वह अपने विचार अन्य लोगों पर नहीं थोपता है। एक राष्ट्रवादी भी अपने देश से प्यार करता है, लेकिन वह शक्ति और प्रतिष्ठा से संचालित होता है। उसे लगता है कि उसका देश दूसरे देशों से कहीं अच्छा है और इस प्रकार इसे दूसरे देशों से अधिक शक्तिशाली होना चाहिए। वह अपनी जीवन पद्धति को दूसरों पर भी थोपना चाहता है।

मेरा जन्म आजादी के कुछ ही दिनों पहले हुआ था। उस समय फिजाओं में देशभक्ति के तराने गूंज रहे थे। भारत का जन्म 1947 में हिटलर, स्टालिन और माओ जैसे तानाशाह शासकों की परछाई में हुआ, जो राष्ट्रवाद की भावना से ओतप्रोत थे और राष्ट्रीय शक्ति से संचालित थे। दूसरी ओर भारत का निर्माण महात्मा गांधी जैसे संत की छत्रछाया में हुआ था, जिन्होंने हमें वास्तविक देशभक्ति का पाठ पढ़ाया। वे हमें भारतीय बनाना चाहते थे, न कि हिंदू या मुस्लिम। जर्मनी में हिटलर, रूस में स्टालिन और चीन में माओ के राष्ट्रवाद ने लाखों लोगों की हत्या की, जबकि महात्मा गांधी की देशभक्ति ने बिना खून बहाए हमें आजादी दिला दी।

विगत वर्षों में दोनों शब्दों के बीच भ्रम की स्थिति ने दुनिया को काफी क्षति पहुंचाई है। ब्रिटेन में राष्ट्रवादियों ने देशभक्ति के नाम पर यूरोपीय संघ से जोरदार ढंग से अपने देश को बाहर कर लिया है। इसी प्रकार डोनाल्ड ट्रंप और अमेरिकी राष्ट्रपति पद के दूसरे उम्मीदवारों के राष्ट्रवाद ने चुनाव अभियान के दौरान विदेशियों के खिलाफ घृणित बातों को जन्म दिया। ट्रंप ने चीन जैसे देशों से आने वाले अप्रवासियों के खिलाफ कार्रवाई करने और वस्तुओं के आयात पर रोक लगाने का वादा किया है। ब्रिटिश राष्ट्रवादी और ट्रंप जैसे लोग अप्रवासियों के खिलाफ हैं और अपने-अपने देशों को शक्तिशाली बनाने पर जोर देना चाहते हैं।

भारत में भी फरवरी में जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय में कन्हैया कुमार के मामले में इन दोनों शब्दों को लेकर भ्रम पैदा हुआ, जिसके बाद राष्ट्रद्रोह पर बहस की शुरुआत हुई। कन्हैया का मानना था कि वह देशभक्त हैं, लेकिन राष्ट्रवादियों ने उसे देशविरोधी माना। भारत में देशभक्त और राष्ट्रवादी, दोनों एक सफल भारत चाहते हैं, लेकिन देशभक्त अल्पसंख्यक सहित सभी भारतीयों की सफलता चाहते हैं। वहीं राष्ट्रवादियों की चिंता सिर्फ देश की ताकत को लेकर है और उन्हें सामाजिक न्याय की चिंता नहीं होती है। एक राष्ट्रवादी अपने देश को हर चीज से ऊपर देखता है और भरोसा करता है कि उसका देश कुछ गलत नहीं कर सकता। एक देशभक्त अपने देश से प्यार करता है, लेकिन उसकी विफलताओं को उजागर करने से नहीं चूकता है। वह सामाजिक न्याय और समानता जैसे मुद्दों पर अपने देश की आलोचना करना पसंद करता है। वहीं एक राष्ट्रवादी अपने देश की आलोचना बर्दाश्त नहीं करता, क्योंकि वह सोचता है कि उसमें कोई कमी नहीं है।

हम सामान्यतः राष्ट्रवाद को सकारात्मक रूप में लेते हैं, लेकिन इसने विश्व इतिहास में हानिकारक भूमिका निभाई है। 19वीं सदी में यूरोपीय राष्ट्रवाद ने एशिया और अफ्रीका में कई देशों को गुलाम बनाया। 20वीं सदी में राष्ट्रवाद दो विश्व युद्धों का कारण बना। हिटलर का जर्मनी गंदे राष्ट्रवाद का सबसे नाटकीय उदाहरण है। 1939 और 1945 के बीच हुए दूसरे विश्व युद्ध का कारण हिटलर ही था। वह विश्व को जीतना चाहता था और अपने से निम्न वर्ग के लोगों को खत्म कर देना चाहता था।

कुछ दिनों पहले देश में जब तीन अगस्त को ऐतिहासिक बुधवार की रात को राज्यसभा में वस्तु एवं सेवा कर विधेयक पारित हो गया तो भारतीय देशभक्त और राष्ट्रवादी, दोनों खुश थे। राष्ट्रवादी खुश थे कि यह भारत को एक मजबूत, समृद्ध और शक्तिशाली देश बनाएगा। देशभक्त खुश थे कि यह गरीब भारतीयों के उत्थान में मददगार होगा। राष्ट्रवादी को अपने देश की महानता का ढिंढोरा पीटने के लिए नारा लगाने की आदत होती है। देशभक्त को अपने देश पर भरोसा होता है और वह शांत रहता है। हर राष्ट्रवादी अपने देश के समृद्ध अतीत के सपनों में डूबा रहता है और उसे फिर से वापस पाना चाहता है। अमेरिका में डोनाल्ड ट्रंप और ब्रिटेन में राष्ट्रवादी अपने उस भव्य अतीत की काल्पनिक दृष्टि से संचालित हैं जब दुनिया पर उनका राज था। हिंदू राष्ट्रवादी भी शुद्ध आर्य काल लाने का सपना देखते हैं और प्राचीन भारत की महिमा को साबित करने के लिए इतिहास को फिर से लिखना चाहते हैं। उनके भारत के इतिहास का विचार बहुत ही साधारण है। उनका मानना है कि यहां के असली निवासी हिंदू हैं, जो बाद में मुस्लिम और ब्रिटिश शासकों के अधीन चले गए। वे भारत को हिंदू राष्ट्र बनाना चाहते हैं।

आप अनुमान लगा चुके होंगे कि मैं एक देशभक्त हूं, न कि राष्ट्रवादी, लेकिन मुझे यह देखकर दुख होता है कि दोनों के बीच अर्थपूर्ण संवाद नहीं होता है। यह आज अधिकांश लोकतांत्रिक देशों में भयानक ध्रुवीकरण के लिए जिम्मेदार है। जहां तक मेरी बात है, मैं अपने देश की प्राकृतिक सुंदरता, मानवनिर्मित उपलब्धियों और इसके इतिहास से प्यार करता हूं। जब मैं अपने देश से प्यार करता हूं तो इसका अर्थ है कि दूसरों को भी सताना नहीं चाहता हूं। मैं कभी-कभी चकित हो जाता हूं कि क्यों मेरा प्यार सीमा पर जाकर रुक जाता है, क्योंकि मैं सोचता हूं कि मैं पहले एक इंसान हूं और बाद में भारत का एक नागरिक हूं।

(लेखक प्रख्यात स्तंभकार हैं और प्रॉक्टर एंड गैंबल के सीईओ रहे हैं)

response@jagran.com

दो तरह के भाव

◆ देशभक्त और राष्ट्रवादी, दोनों एक सफल भारत चाहते हैं, लेकिन देशभक्त सभी भारतीयों की सफलता चाहते हैं। वहीं राष्ट्रवादियों की चिंता सिर्फ देश की ताकत को लेकर है। उन्हें सामाजिक न्याय की परवाह नहीं होती

बाकी है असली बदलाव

आजादी के सात दशक बाद भी सही मायने में लोक का तंत्र न स्थापित हो पाने पर निराशा जता रहे हैं **गिरीश्वर मिश्र**

'लोकतंत्र' बड़ा ही आकर्षक विचार है और स्वतंत्र भारत की चेतन-अचेतन हर तरह की आकांक्षाओं से जुड़ा हुआ है। इसे सुनकर मन में अनेक स्मृतियां झंकृत हो उठती हैं। इन सबके केंद्र में अंग्रेजों की गुलामी से मुक्ति का भाव सबसे प्रबल होता है। भारत में अंग्रेजों ने व्यापार से शुरू कर जो राज्य स्थापित किया उसकी पकड़ कई तरह से मजबूत की। इसके लिए उन्होंने देश को हर तरह से कमजोर करने की कोशिश की। आर्थिक शोषण, नागरिक अधिकारों का हनन, शिक्षा का विरूपीकरण, भेद-भाव और फूट डालकर देश को दुर्बल करने की हर कोशिश की। जो भारत अंग्रेजों ने हमें लौटाया वह उस भारत के मुकाबले दीन-हीन था जब उन्होंने यहां पहली बार पदार्पण किया था। भारत के लिए शोषण की उनकी नीतियां ऐसी थीं जिन्होंने यहां की मौजूद कला और कारीगरी की स्थानीय आधार संरचना को बुरी तरह से ध्वस्त किया। हममें से बहुतों को अंग्रेजी तौर-तरीका, सोच-विचार और ज्ञान-विज्ञान भाने भी लगा था और उस पर श्रेष्ठता की मुहर भी लग चुकी थी। स्वतंत्रता की घड़ी एक मुश्किल घड़ी के रूप में आई।

भारत अंग्रेजों का उपनिवेश था और जब एक उपनिवेश स्वतंत्र होता है तो एक स्वतंत्र यानी स्वायत्त देश के रूप में उसके सामने अपने को परिभाषित करने की और सामाजिक जीवन को अपने ढंग से संचालित करने की चुनौती खड़ी होती है। उसके सामने कई विकल्प होते हैं, जिनमें से वह चुन सकता है। हर विकल्प की अपनी कीमत होती है और उससे जुड़ा हुआ जोखिम भी होता है, पर जो भी चुनाव होता है उसके दूरगामी परिणाम होते हैं। हमारी मुसीबत कुछ ज्यादा ही बढ़ चली थी, क्योंकि हमने सोच विचार के चौखटे और पैमाने औपनिवेशिक व्यवस्था से ही उधार लिए थे और उनमें विश्वास भी था, क्योंकि भारत-भूमि में ही वे जांचे परखे जा चुके थे। कह सकते हैं कि हम उसी में खो से गए थे। जो कुछ भी मिला और जिस रूप में मिला उसे स्वीकार कर लिया और उससे बाहर निकलने की कोई कोशिश नहीं की। खास तौर पर सामाजिक, शैक्षिक और कानून व्यवस्था के क्षेत्र में हमने अंग्रेजों का माडल अंगीकार कर लिया और उसी औपनिवेशिक तंत्र की परिधि में लोक तंत्र को चलाना शुरू किया। देश का झंडा बदल गया, अधिकारी भी बदल गए, पर जो उनकी जगह आए उनकी नजरों में पुराना ढर्रा ही ठीक था, मुफीद था। पद, काम, तौर, तरीके सब कुछ वही रहे। इसलिए मानसिकता भी वही रही। हमारे जन प्रतिनिधि के रूप में जो लोग चुन कर विधानसभाओं या संसद में पहुंचते हैं, जिनमें से कई मंत्री बनते हैं, उनके भी तेवर बदलने में देर नहीं लगती। कायांतरण हुआ और भारतीय शरीर में अंग्रेजी आत्मा का वास शुरू हुआ और ऐसा हुआ कि देश को अभी तक उससे निजात नहीं मिल सकी है। यह जरूर हुआ कि भारत खुद अपने बारे सोचने से डरने लगा। विकल्प की तलाश जरूरी नहीं समझी गई। सरकार चलाने का ढांचा, शिक्षा का ढांचा, कानून का ढांचा सब कुछ जस का तस वैसा ही चलता रहा। सोचा गया कि धीरे-धीरे ठीक कर लेंगे पर पैबंद लगाने से कुछ बात बनी नहीं। दफ्तर की वही पुरानी तहजीब है और काम करने या लटकाने के लटके-झटके भी बहुत नहीं बदले हैं। बिना सिफारिश, डाट-डपट या अनैतिक साधनों के स्वतः बात बनाना मुश्किल होता है।

लालफीताशाही अभी भी हमारी व्यवस्था पर बुरी तरह से हावी है। उसकी जकड़न कई तरह की अव्यवस्था और भ्रष्टाचार को जन्म देती है। इस पर नियंत्रण के लिए नैतिकता के मानक आवश्यक हैं, पर आज जिस सामाजिक परिवेश में हम रह रहे हैं उसमें नैतिकता का प्रश्न गौण और एक हद तक अप्रासंगिक हो गया है। परिवार, समुदाय या देश कुछ भी महत्व नहीं रखता। साधन की शुचिता के प्रति किसी तरह का लगाव नहीं है। अब न तो व्यक्ति को अंतरात्मा की कचोट है, न कानून का ही भय है। इस तरह के हालात देश के आर्थिक और सामाजिक विकास के मार्ग में बड़े बाधक बन रहे हैं। शिक्षा, पुलिस, कानून और शासन पद्धति के विभिन्न पक्षों को सुधारने के लिए अभी तक अनेक आयोग बैठाए गए, समितियां बनीं और अपने समय के योग्यता में श्रेष्ठ लोगों को दायित्व भी सौंपा गया पर बात बन न सकी। समस्याएं दिन प्रतिदिन और भी जटिल होती गईं। हम या तो निर्णय नहीं ले पाते हैं या फिर उन निर्णयों पर अमल नहीं कर पाते हैं।

शिक्षा को ही लें। शिक्षा समाज की रीढ़ होती है। हमने अशिक्षा दूर करने का व्रत लिया, साक्षरता बढ़ाई। औपचारिक शिक्षा के विस्तार के लिए स्कूल, कालेज और विश्वविद्यालय खोले गए और इनकी संख्या में काफी वृद्धि हुई है, पर इसके उत्पाद का समाज से क्या संबंध होगा, यह विचार नहीं किया गया। इसका भयानक परिणाम हमारे सामने है। आज शिक्षित प्रशिक्षित बेरोजगारों की भीड़ बेतहाशा बढ़ती जा रही है और साथ ही अयोग्य स्नातकों की पैदावार बढ़ रही है। जैसी भी शिक्षा है उसकी गुणवत्ता पर प्रश्न चिह्न लग रहे हैं। परीक्षा एक प्रकार का मखौल बनती जा रही है। पढ़ाई का ज्ञान और कौशल के विकास से रिश्ता कमजोर हो गया है। वह फैशन के हिसाब से हो रही है। तकनीकी और प्रबंधन के पाठ्यक्रमों की धूम मच रही है। इनमें आवश्यकता से कहीं ज्यादा विद्यार्थियों को प्रवेश दिया जा रहा है और वे डिग्री और डिप्लोमा भी पा रहे हैं। शिक्षा के विस्तार की जरूरत को देखते हुए निजी क्षेत्र को अवसर दिया गया और अब हर स्तर की और हर तरह के विषय की पढ़ाई में इन निजी संस्थाओं का अबाध प्रवेश हो रहा है। उनमें से अनेक संस्थाओं में होने वाली पढ़ाई की गुणवत्ता का नियंत्रण न के बराबर है। योग्यता की दृष्टि से इन छात्रों की परिपक्वता निम्न स्तर की होती है पर फीस बढ़ चढ़कर ली जाती है, क्योंकि इन संस्थाओं के मालिक इन्हें उद्योग की तरह चलाते हैं और मुनाफा कमाना ही उनका अभीष्ट है। शिक्षा, कानून या व्यवस्था के तंत्र की गुणवत्ता और प्रासंगिकता के लिए आधारभूत संरचना को दृढ़ बनाना आवश्यक है। यह तभी हो सकेगा जब देश के विकास और समाज की उन्नति को ध्यान में रख कर आचरण की शुद्धता और मानकों के अनुपालन के लिए कठोर नियम अपनाए जाएं। स्वतंत्रता को खैरात की सौगात मानना भूल है। हमें उसकी रक्षा के लिए स्वयं को समर्पित करना होगा।

(लेखक महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के कुलपति हैं)

response@jagran.com

जज्बे की जरूरत

◆ स्वतंत्रता को खैरात की सौगात मानना भूल है। हमें उसकी रक्षा के लिए स्वयं को समर्पित करना होगा। जब ऐसा होगा तभी देश का विकास होगा और समाज की उन्नति होगी

ऊर्जा

योग-साधना

जीवन को सफल बनाने और सार्थक करने के अनेक तरीके लोगों के बीच प्रचलित है।। इनमें एक सबसे सुगम विधि है-योगाभ्यास। हमारे यहां प्राचीन काल से ही व्यायाम या इसका परिवर्तित रूप योग लोगों के मध्य प्रचलित रहा है। ऋषियों ने इस योग से आत्मा को परमात्मा से जोड़ने का कार्य किया है। मुनियों ने परिभाषित किया है कि जिन साधनों से आत्मा की सिद्धि और मोक्ष की प्राप्ति होती है उसे योग कहते हैं। आत्म-दर्शन और आंतरिक प्रेरणा (आत्मा की आवाज) द्वारा किया गया कार्य ही योग है। योग का शाब्दिक अर्थ होता है-चित्तवृत्तियों का निरोध। कहने का आशय है कि मन के समस्त अनावश्यक विचारों को रोककर मन को अभीष्ट ध्येय और प्राकृतिक पदार्थों में नियुक्त करना, उनके यथार्थ स्वरूप को जानना और ईश्वर का साक्षात्कार करना योग है। आज के वर्तमान परिप्रेक्ष्य में जबकि हमारी जीवन-शैली अनेक प्रकार के कारणों से असंतुलित हो गई है तब इसे सही मार्ग पर लाने में योग साधना का बहुत महत्व है। हम योग साधना के माध्यम से अपने जीवन में संतुलन बनाकर अनेक समस्याओं से छुटकारा पा सकते है। इस संबंध में यम-नचिकेता संवाद बड़े महत्व का है। नचिकेता को समस्त भौतिक पदार्थों का वरदान देकर यम ने अपना पिंड उससे छुड़ाना चाहा, किंतु नचिकेता के बालमन ने इसे स्वीकार नहीं किया और वह कहने लगा-'मुझे कृपाकर वह ज्ञान प्रदान कीजिए, जिस ज्ञान का मैं श्रवण कर अमरत्व को प्राप्त कर लूं। मुझे ईश्वरीय तत्व ज्ञान प्रदान करें।' अंत में यम ने नचिकेता को तत्व ज्ञान प्रदान किया।

इसी तत्व ज्ञान को प्राप्त करने का लक्ष्य हमें अपने जीवन में भी पूरा करना होगा। इसे हम योग साधना के द्वारा अपनी चित्तवृत्तियों पर नियंत्रण करके सहज में ही प्राप्त कर सकते है। जैसे ही हमारी चित्तवृत्तियां आध्यात्मिकता की ओर अग्रसर हो जाएंगी, वैसे ही हम भौतिकता के मोह से मुक्त हो जाएंगे। इतना अगर हो गया तो हमारे जीवन की समस्याओं का समाधान हो जाएगा। ऐसा इसलिए, क्योंकि योग के माध्यम से मन जैसे ही शांत होगा, मन में भगवान का सुमिरन चलने लगेगा। फिर तो इस सुमिरन से हमारे मन का मोह भागेगा और हमारी जीवन शैली ही संपूर्ण रूप से बदल जाएगी। प्रभु हमें, हमारे सभी पूर्व अपराधों को क्षमा कर अपना बना लेंगें। और हमें चाहिए भी क्या? इतना हो गया तो जीवन पूर्ण हो गया।

◆ **डॉ. विश्राम**

जागरण Junction — आपकी आवाज, आपका ब्लॉग — www.jagranjunction.com

भावी पीढ़ी की अनदेखी

गुजरे जमाने की अपेक्षा अब कहीं लोग ज्यादा पढ़े लिखे भी हैं और घर से लेकर संसद तक अपने तथा दूसरे के अधिकारों को भी जानते हैं। कब, कहां अपना और दूसरे के अधिकारों का हनन हो रहा है, इसकी निगरानी के लिए राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर संस्थाएं बनाई गई हैं। भारत में अनेक संगठन और संस्थाएं हैं जो हमारी शिक्षा, जागरूकता और व्यक्तित्व विकास से जुड़ी हुई हैं। इन सबके बावजूद आज बच्चों के हालात संतोषजनक नहीं हैं। जिस देश के बच्चे जितने स्वस्थ और होनहार होंगे उतना ही उस देश का विकास होगा। चीन, जापान, अमेरिका, ब्रिटेन आदि देश विकास की दौड़ में सबसे आगे क्यों हैं। इसलिए, क्योंकि वहां बच्चों के भविष्य के प्रति अभिवावक से लेकर सरकार तक सभी सतर्क हैं। और तो और उनकी अच्छी देखभाल के लिए बच्चों के जन्म संबंधी भी कानून बना हुआ है। भारत जैसे देश में क्या है? किसी को इसकी परवाह नहीं है कि बच्चों के साथ आज क्या हो रहा है। क्या उन्हें शिक्षा मिल रही है? क्या उनका स्वास्थ्य ऐसा है कि वे चुनौतियों का सामना कर सकें?

– अखिलेश कुमार

पूरा ब्लॉग पढ़ने के लिए यथावत टाइप करें : http://bit.ly/2b39s26

बेरोजगारी का बोझ

विश्व का कौन सा देश है जहां भारतीय रोजी रोटी कमाने नहीं जाते। दस हजार भारतीय सऊदी अरब में नौकरी से निकाले गए हैं। वे भारत से मदद की गुहार कर रहे हैं। सऊदी अरब में 30 लाख भारतीय काम कर रहे हैं। तेल की कीमतें कम होने से उनकी अर्थव्यस्था पर बहुत असर पड़ा है। अब यूरोप के दरवाजे भी बंद हो रहे हैं। आर्थिक मंदी ने समूचे यूरोप को अपने प्रभाव में ले लिया है। जब अपने नागरिक बेरोजगार हैं तो प्रवासियों को कौन काम देगा। सबसे पहले गुस्सा प्रवासियों पर निकलेगा। पहले भी उनका सब कुछ लूटकर निकाल दिया जाता रहा है। यदि अधिकांश को भारत लौटना पड़ा, तो देश में बेरोजगारों की संख्या बढ़ जाएगी। आज वही राजनेता जनप्रिय हो रहे हैं जो प्रवासियों को निकालने की बात करते हैं। यूरोप के पढ़े लिखे नौजवान विदेशों में काम की खोज में घर छोड़ने पर विवश हैं। बांग्लादेश के रेस्त्रां में खाना खाने गए विदेशियों को आतंकवादियों ने अपना शिकार बनाया। भारत की जनसंख्या चीन के बाद दूसरे नंबर पर है। जनसंख्या की बढ़ोत्तरी भी अनियमित ढंग से हो रही है। प्राइवेट नौकरियों में अनिश्चितता बनी रहती है।

– शोभा

पूरा ब्लॉग पढ़ने के लिए यथावत टाइप करें : http://bit.ly/2aO710o

सम्मान का सही तरीका

भूला-बिसरा बलिदान शीर्षक से लिखे अपने लेख में स्मिता मिश्रा ने मोदी सरकार के कार्यक्रम याद करो कुर्बानी पर अपने विचार रखे हैं। इस कार्यक्रम में कुछ खामी नजर आ रही है। याद करो कुर्बानी की जगह इस कार्यक्रम का नाम होता कि देशभक्तों की राह चले हर हिंदुस्तानी तो शायद यह और भी बेहतर होता, क्योंकि कुर्बानी याद करने से भी अच्छा है कि कुर्बान होने वालों की राह का अनुसरण किया जाए। हमारे देश में राष्ट्रीय पर्वों पर तो बड़े-बड़े भाषण दिए जाते हैं, लेकिन वे सब हकीकत की दुनिया से बहुत दूर होते हैं। अगर ऐसा नहीं होता तो आज हमारा देश फिर से सोने की चिड़िया बन गया होता, गरीबी का तो नामोनिशान ही नहीं होता। दिखावे से अच्छा होता है हकीकत पर खरा उतरा जाए। जब जागो तभी सवेरा। आज सभी को यह प्रण लेना चाहिए कि उन्हें स्वतंत्रता सेनानियों के बताए मार्ग पर चलना है, ताकि भारत सभी राष्ट्रीय समस्याओं से मुक्त होने की राह पर पूरी रफ्तार से अग्रसर हो सके।

राजेश कुमार चौहान, जालंधर

पाठकनामा

pathaknama@nda.jagran.com

गुलाम कश्मीर में दमन

पाक अधिकृत कश्मीर में लोगों का गुस्सा पाक के खिलाफ बढ़ता ही जा रहा है। इस कारण पाकिस्तान की बेचैनी बढ़ना स्वाभाविक है। उसको डर लगने लगा है कि कहीं हमारे हाथ से अधिकृत कश्मीर निकल न जाए, इसी डर के कारण पाकिस्तान ने तकरीबन 500 लोगों को गिरफ्तार कर जेल में डाल दिया है। इनमें से पाक अधिकृत कश्मीर में समाजसेवी बाबा जान को भी गिरफ्तार कर लिया है। इस प्रकार पाकिस्तान पाक अधिकृत कश्मीर में लोगों की आवाज दबा रहा है। उनके ऊपर दमनकारी नीति अख्तियार कर रहा है। इसे भारत को विश्व मंच पर उठाना चाहिए। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के उस कथन से पाक अधिकृत कश्मीर के लोगों में थोड़ा ऊर्जा का संचार हुआ है, जिसमें मोदी ने कहा था कि अब केवल गुलाम कश्मीर पर ही बात होगी।

नीरज कुमार पाठक, नोएडा

कैसे डाक्टर

हाल ही में देश के कुछ प्रतिष्ठित अस्पतालों में किडनी के सौदागरों का पर्दाफाश हुआ है। दिल्ली हो या मुंबई अब तक की जांच में बड़े-बड़े डाक्टरों के नाम सामने आए हैं। इससे यह साबित होता है कि भगवान का रूप माने जाने वाले जिन लोगों पर हम यकीन कर इलाज कराने जाते हैं उनमें कुछ मानव शरीर के साथ खिलवाड़ कर मोटा पैसा बना रहे हैं। अस्पतालों में किडनी प्रत्यारोपण के नियमों का उल्लंघन किया जा रहा है। ये कथित डाक्टर चिकित्सा के पेशे को बदनाम कर रहे हैं।

विजय कुमार धानिया, रामजस कॉलेज, दिल्ली विवि

अमानवीयता की पराकाष्ठा

गुड़गांव के स्कूल बस में चार साल की नन्ही बच्ची जिसे दुनियादारी की किंचित भी समझ न हो उसके साथ दुराचार कर उसके समूल जीवन को स्याह कर देना अमानवीयता की पराकाष्ठा है। राह चलते बच्ची को व साथ ही उसकी मां को परिवार के सामने बेआबरू कर मर्माहत कर देना, फिर सरेआम अध्यापिका के साथ वहशी हरकत करना आदि आदि ऐसी लोमहर्षक कुकृत्य रुकने का नाम ही नहीं ले रहे। ऐसे में हम नारी की किस तरह की आजादी की बात करते हैं। न जाने कब कहां कोई दरिन्दा प्रगट होकर स्त्री की अस्मिता को तहस नहस कर दे। सही मायने में कहा जाए तो आज भी औरत हर पल हर जगह संत्रस्त है। इस स्थिति से पता नहीं कब पूणत : त्राण मिलेगा?

कजरी मानसी ऐश्वर्यम, गुड़गांव

बेदिल व बेदर्द दिल्ली

दिल्ली कभी दिल वालों की हुआ करती थी। लगता है अब दिल्ली बेदिल व बेदर्द हो गई है। एक टेंपो वाले ने पैदल जा रहे व्यक्ति को टक्कर मार दी। टेंपो चालक रुका, चारों तरफ देखा और चुपचाप वहां से खिसक लिया। घायल व्यक्ति की मदद करना तो दूर, किसी ने पुलिस को सूचना देने की भी जहमत नही उठाई । लोग उसे अनदेखा कर अपनी राह चलते गए। एक रिक्शा वाला वहां रुका पर मदद के लिए नहीं, वह भी पल-पल मर रहे उस व्यक्ति का फ़ोन उठाकर चलता बना। हम क्यूं इतने स्वार्थी और संवेदनहीन हो गए या किसी झंझट में पड़ने से डरते हैं, पर किसी की जान बचाना हर झंझट से ऊपर है। लोगों को सोचना चाहिए कि उनके साथ भी हादसा हो सकता है। इस बारे में समाज को जागरूक करना अनिवार्य है।

रणजीत वर्मा, फरीदाबाद

बच्चों को नैतिक शिक्षा

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में आज जिस प्रकार से हमारी भावी युवा पीढ़ी जीवन मूल्य की इतिश्री कर बैठी है, वह चिंता का विषय है। संस्कारों व अपनी अद्भुत संस्कृति - सभ्यता के लिए विख्यात भारत आखिर पाश्यात्य संस्कृति के चंगुल में क्यों फंसता जा रहा है। नैतिक शिक्षा मात्र नैतिक शिक्षा की किताबे पढ़ लेने से नहीं आ सकती हैं। परिवार व माता- पिता को इस रोजमर्रा की भागदौड़ भरी जिंदगी में से चंद पल निकालकर अपने लाडले को देने होंगे। नैतिक शिक्षा के गुर बालक अपनी पहली पाठशाला परिवार से ही सीखता है।

devendrasuthar196@gmail.com

जनपथ

वर्ष उन्हत्तर की हुई आजादी इस बार,
लेकिन हम शिशु ही रहे बने न जिम्मेदार।
बने न जिम्मेदार सिर्फ अधिकार सवाचें,
कर्तव्यों की भूल भटक ना पाती बांचें।
औरों से हम-आप उमीदें रखें बहत्तर,
रोना ही फिर भाग्य समझिए वर्ष उन्हत्तर।

-ओमप्रकाश तिवारी

ट्वीट ट्वीट

कुछ टीवी चैनल सैनिकों के साथ स्वतंत्रता दिवस का जश्न मनाने के लिए फिल्मी सितारों को बुलाते हैं। मुझे लगता है कि हमारे देश के किसान भी इस सम्मान के हकदार हैं। जय जवान जय किसान। **- देविंदर शर्मा** @Devinder_Sharma

एमजे अकबर ने कभी लिखा था कि एक दिन पाकिस्तान की आधी आबादी नागरिकता पाने के लिए भारत के दरवाजे पर दस्तक दे रही होगी। वहां जिस तरह के हालात हैं उससे लगता है कि वह दिन अब दूर नहीं है। **- मधु किश्वर** @madhukishwar

अब्दुल बासित को पाकिस्तान वापस भेज दिया जाना चाहिए। वह भारत में जिहादियों के प्रतिनिधि के रूप में काम कर रहे हैं। कश्मीर पर उनका बयान अक्षम्य है। **- डॉ. राकेश सिन्हा** @RakeshSinha01

जागरण जनमत

कल का परिणाम

क्या आपको लगता है कि मोदी सरकार की पाकिस्तान नीति में सकारात्मक बदलाव हो रहा है?

आज का सवाल

क्या आप मानते हैं कि एक आजाद देश के रूप में भारत ने सत्तर वर्षों में आपकी अपेक्षा के अनुरूप प्रगति की है?

अपनी राय और अधिक लोगों तक पहुंचाने के लिए अपने मोबाइल के मैसेज बॉक्स में जाकर POLL लिखें, स्पेस देकर Y, N या C लिखकर 57272 पर भेजें

Y-हां, N-नहीं, C-कह नहीं सकते

परिणाम एसएमएस से प्राप्त नतीजों के साथ जागरण इंटरनेट संस्करण के पाठकों का मत है। सभी आंकड़े प्रतिशत में।